1 से 8 तक | 25 ग्राम | मूल्य 10 रुपए

श्री कल्कि की मूर्तियाँ लगाकर बने राजा रानियों के निरंतर प्रयासों से जगदगुरुओं के आशीर्वाद के बाद अब जगदगुरु की संरक्षता में शुरू हुई कल्कि जी की मूर्ति स्थापना

जगदगुरु शंकराचार्य जी ने भगवान श्री कल्कि के अंगों को तेज देने के लिए अपने सीधे अंगूठे से भगवान के हृदय को तेज प्रदान किया

गंगा महारानी की कृपा से 14 का कमाल

भगवान श्री राम ने 14 वर्षों के बनवास में दैवीय शक्तियों की मदद से रावण को मार कर लंका पर विजय प्राप्त की

14 दिनों में कल्कि बाल वाटिका ने दैवीय शक्तियों की मदद से चार दिशा में

बैजनाथ धाम-नैनीताल-शामली-लखनऊ में मूर्तियाँ लगाईं

बारह ज्योर्तिलिंगों में से एकमात्र ज्योर्तिलिंग जहाँ शिव शक्ति एक साथ विराजमान हैं

बैजनाथ धाम
19 जनवरी 2014
श्री महेश बिरवानी
डॉ. वेद प्रकाश गुप्त

नैनीताल
14 जनवरी 2014
श्री मनोज पांडे
श्री अनुज रस्तोगी

श्री राम गंगा पार करते हुए

लखनऊ
17 जनवरी 2014
श्री अंकुर गौतम
सुश्री मेघना गोयल

गंगा महरानी

शामली
26 जनवरी 2014
श्री बी.बी. गुप्त
सुश्री आशा कंवर

वैद्यनाथ धाम अपने में विशिष्ट क्यों ?

मां पार्वती के क्रोध का रहस्य

रावण का पिता विश्वश्रवा पूजा कराके लंका दक्षिणा में ले गया

एक समय की बात है कि माता पार्वती भगवान शंकर से बोलीं, ''हे प्राणनाथ! आप संसार के स्वामी होते हुए भी वन-वन भटकते रहते हैं और इसी कारण मैं भी आपके साथ वनों में भटकती रहती हूँ जबकि सभी देवता अपनी पत्नियों को महलों में रखते हैं।''

माता गौरी की यह उलहाने वाली बात सुनकर भगवान शिव शंकर बोले, ''अगर ऐसी बात है तो मैं तुम्हें स्वर्ण निर्मित महल बनवा देता हूँ। यह महल संसार भर में अद्वितीय होगा।''

सोने का महल जब बनकर तैयार हो गया तो गृह प्रवेश के लिये उस समय के प्रकाण्ड पंडित विश्वश्रवा को बुला गया। विश्वश्रवा रावण के पिता थे। गृह प्रवेश की पूजा समाप्त होने पर भगवान शंकर ने विश्वश्रवा से पूछा, ''पंडित जी! आपको दक्षिणा में जो चाहिए मांग लो।'' विश्वश्रवा बोले, ''यह तो मेरे लिये बड़े सौभाग्य की बात है कि आपने गृह प्रवेश हेतू मुझसे पूजा करवाई। अब मुझे दक्षिणा में कुछ नहीं चाहिए। आपका आशीर्वाद ही पर्याप्त है।'' भगवान शंकर बोले, ''दक्षिणा में कुछ तो आपको लेना ही होगा वरना हमारी पूजा अधूरी रह जाएगी।'' इस पर पंडितराज विश्वश्रवा सकुचाते हुए बोले, ''हे प्रभु! दक्षिणा में जो भी मांगूगा क्या आप वह वस्तु मुझे दे देंगे?'' भोले बाबा ने हां कर दी। विश्वश्रवा बोले तो मुझे दक्षिणा में इस सोने के महल को ही दे दीजिए। विश्वश्रवा का इतना कहना था और शंकर भगवान ने मुस्कराते हुए तथास्तु कह दिया और माता पार्वती के लिये बनवाया गया स्वर्ण का महल पंडित जी को दक्षिणा में दे दिया। बाद में यह स्वर्ण निर्मित महल लंका के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मां पार्वती द्वारा श्राप जब माता गौरी को इस बात का पता चला तो वे आग बबूला हो गईं और क्रोधित होकर उन्होंने विश्वश्रवा को श्राप दिया, ''हे लालची ब्राह्मण! तूने मुझसे यह महल छीन लिया है परन्तु जा तेरी आने वाली पीढ़ी इस महल का उपयोग नहीं कर सकेगी, तुम्हारा सारा वंश एक साथ नष्ट हो जाएगा।''

रावण की माता केकसी की चाहत रावण, विश्वश्रवा को ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण लंका पर उत्तराधिकारी के रूप में उसका अधिकार बनता था। इसलिये रावण से द्वेष होना माता पार्वती का स्वाभाविक था। रावण की माता केकसी हमेशा उससे भगवान शंकर को लंका में स्थापित करने के लिये कहा करती थीं। उसका कहना था कि यदि भगवान शंकर लंका में नहीं आए तो माता पार्वती के रोष से तुम बच नहीं सकते। तुम्हारा विनाश निश्चित है।

रावण द्वारा किया घोर तप

रावण की माता केकसी की चाहत रही कि किसी प्रकार शंकर जी लंका में आ जाए ताकि लंका विनाश से बचे। अत: भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिये शिव भक्त लंका का राजा रावण कैलाश पर जाकर तपस्या करने लगा। वह काफी समय तक भगवान शंकर की आराधना करता रहा परन्तु उसे भगवान शंकर के दर्शन नहीं हो सके।

इस पर उसने जंगल में एक स्थान पर गड्ढा खोदा और उसमें अग्नि स्थापित की। अब वह वहाँ यज्ञ करने लगा। उसकी तपस्या उग्र होती गई। गरमी में पाँच अग्नि कुण्डों के बीच में बैठता। वर्षा में खुले मैदान में रहता और खुले में ही सोता। जाड़ों के मौसम में बर्फ के जल में स्नान करता। भोजन में कंद मूल का प्रयोग करने लगा। इतनी घोर तपस्या पर भी भगवान शंकर ने उसे दर्शन देना उचित नहीं समझा। अब वह यज्ञ कुण्ड में एक-एक करके अपने शीश चढ़ाने लगा। लेकिन शंकर भगवान भी ऐसे वैद्य

श्री कल्कि महोत्सव 9 फरवरी 2014

स्थान : चौक कसेरू वालान, पहाड़गंज, दिल्ली

समय : प्रात: 10 बजे से रात्रि 10 बजे तक

आप सभी सादर आमंत्रित हैं

(सर्जन) हैं कि उन्होंने उसकी गर्दन बार–बार लगाकर सी (सिलाई) दी। इसी से उनका नाम बाबा वैद्यनाथ पड़ा। इस प्रकार उसने यज्ञ कुण्ड में अपने 9 शीश चढ़ा दिये। अब वह अपना अंतिम शीश चढ़ाने के लिये तैयार हुआ तो भगवान शंकर ने प्रकट होकर रावण का हाथ पकड़ लिया। भगवान शंकर ने रावण से वरदान मांगने के लिये कहा। लंकाधिपति रावण ने भगवान शंकर से कहा कि यदि आप मुझसे सचमुच प्रसन्न हैं तो आप मेरी नगरी लंका में चलकर रहें। मैं आपका सेवक हूँ। आप मेरी यह इच्छा अवश्य पूरी करेंगे, मुझे इसका पूरा विश्वास है।

भगवान शंकर बोले, ''हे रावण! ठीक है मैं तुम्हारे यहाँ चलने को तैयार हूँ। मेरे 12 ज्योतिर्लिंग हैं। तुम इसमें से मुझे जिस रूप में ले जाना चाहो, ले जा सकते हो।

भगवान शंकर के वरदान से समस्त इंद्रपुरी में शोक व्याप्त हो गया। सारी सृष्टि में हाहाकार होने लगा। सभी देवता व ऋषिगण मिलकर भगवान शंकर के पास जाकर उनकी स्तुति करने लगे। भगवान शंकर ने सबकी बात सुनकर कहा ठीक है मैं कोई उपाय सोचता हूँ। इसपर भगवान शंकर ने रावण को सावधान किया कि यदि तुमने शिवलिंग को रास्ते में कहीं रख दिया तो वह उस जगह से किसी से भी नहीं उठेगा। रावण इस बात पर राजी हो गया। तब भगवान शंकर रावण से बोले, ''मेरे 12 ज्योतिर्लिंग हैं। तुम मुझे इनमें से जिस रूप में ले जाना चाहो, ले जा सकते हो।'' रावण ने माता पार्वती द्वारा पूजित आत्मलिंग का चयन किया।

जैसे ही रावण आत्मलिंग को उठाने लगा तो माता पार्वती ने रावण से कहा कि, ''बिना आचमन किये इस शिवलिंग को स्पर्श करने से तुम्हारी आयु, यश और बल आदि नष्ट हो जाएंगे। अत: यथोचित आचमन करके इस ज्योतिर्लिंग को उठाकर लंका ले जाना।'' रावण ने आचमन के लिये माता पार्वती से जल मांगा। रहस्यमयी, क्रोधित मां पार्वती ने उसे अभिमंत्रित जल दिया। रावण ने शिवलिंग को उठाने हेतु संकल्प लेने के लिये जैसे ही आचमन किया तभी रावण के मुँह से आचमन के द्वारा इस पर रावण ने कहा कि बाबा आप इस बात की चिंता न करो मैं बहुत बलशाली हूँ, शिवलिंग को पुष्कर विमान पर रखकर लंका ले जाऊंगा। रावण ज्योतिर्लिंग को उठाकर अपने पुष्पक विमान में सवार होकर लंका को चल दिया। रास्ते में उसे हरितिकी वन में बहुत जोर की लघुशंका लगी। विमान को उसने वन में उतारा। वहाँ पर उसे एक ग्वाला दिखाई दिया जो गणेश जी का रूप था। रावण ने उस ग्वाले से कहा तुम शिवलिंग को हाथों में पकड़ लो। मुझे बहुत जोर से लघुशंका लगी है। वह ग्वाला कहने लगा इतने भारी शिवलिंग को मैं अधिक देर तक हाथों में पकड़े नहीं रह सकता। इसलिये तुम शीघ्र लघुशंका से निपट कर आ जाना। भगवान की लीला अपरम्पार है। लघुशंका से निवृत होने में उसे बहुत समय लग गया। गणेशरूपी ग्वाले ने आशुतोष वैद्यनाथ को वहीं पर चिता भूमि पर रख दिया।

रावण लघुशंका से निवृत होकर जब लौटा तो उसने देखा कि शिवलिंग की स्थापना धरती पर हो चुकी है। रावण ने शिवलिंग को उठाने की बहुत चेष्टा की। परन्तु सब व्यर्थ रहा अर्थात उससे शिवलिंग नहीं उठा। रावण ने क्रोध में आकर भगवान वैद्यनाथ जी को ऊपर से अंगूठे से दबा दिया। भक्त की मर्यादा हेतु भगवान शंकर थोड़ा नीचे को तो दब गए परन्तु वहाँ से टस से मस नहीं हुए। रावण भगवान शंकर को लंका नहीं ले जा सका और निराश होकर वह लंका लौट गया।

सति की चिता पर रखे जाने वाले स्थान पर सभी देवता श्री हरि के साथ आए और भगवान के शिवलिंग की पूजा अर्चना कर विधिवत रूप से वहाँ स्थापित कर गए। तभी से बच्चों इस धाम का साधारण जल भी गंगा जल के समान है, यहाँ की साधारण मिट्टी भी सोने से कम नहीं है। रावणेश्वर वैद्यनाथ को कामदा लिंग भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ जो भी मनुष्य जैसी भी कामना लेकर आता है उसकी कामना अवश्य ही पूरी होती है।

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 1 मार्च 2014 एवं 5 अप्रैल 2014
स्थान : एम.के. हाउस, सी–2/8 अशोक विहार फेज–2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली–52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल (9899698240)
संचालिका– सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : शनिवार 8 मार्च 2014 एवं 12 अप्रैल 2014
स्थान : जी–3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज दिल्ली–92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका– सुश्री मेघना गोयल (913677829)

*** कल्कि जी के उपचारों का कमाल कल्कि जी डाल-डाल मैं (कलियुग) पात-पात**

17 जनवरी को बैजनाथ धाम की सकुशल यात्रा के लिए आप सभी से अनुरोध है कि 140 रु हाथ लगाकर नीचे लिखे देवी देवताओं से प्रार्थना अवश्य कर लें—

भैंरों जी— हे भैरों बाबा! यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, बुरी शक्तियों को उनका भाग देकर उनके स्थानों पर भेजिए। हम बाबा भोलेनाथ के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से जो जा रहे हैं। मार्ग में यह शक्तियां किसी भी प्रकार से रोड़े न अटका सकें जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

काली जी—हे काली माँ! यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। कलियुगी, आसुरी, दुराचारी, बुरी शक्तियों को उनका भाग देकर उनका दमन कीजिए। हम बाबा भोलेनाथ के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से जो जा रहे हैं। मार्ग में यह शक्तियां किसी भी प्रकार से रोड़े न अटका सकें जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

योगमाया जी— हे योगमाया महारानी, यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। इस जगत की समस्त दैवीय और आसुरी शक्तियाँ आपके सम्मोहन के आधीन हैं। आपकी इच्छा से गतिशील हैं। कलियुग के नेतृत्व में उसकी जो भी अघोरी, दुराचारी, तांत्रिक, शैतानी, मायावी, कुटिल शक्तियाँ कल्कि जी की कृपा से बैजनाथ धाम की यात्रा मार्ग में किसी भी प्रकार से रोड़े अटकाना चाहती हैं उन्हें मोहित करें, भ्रमित करें, हमारी तरफ से उनका ध्यान हटाएं, उनके प्रहार की दिशा मोड़ें। उन्हें उनका भाग देकर संतुष्ट करें। उनके हर प्रहार से हमारी रक्षा करें। जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

वरूण देव— हे वरूण देव यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। भोले बाबा के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से हम जा रहे हैं, मार्ग में हमें अपनी अति विशेष कृपा प्रदान कीजिए,जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

पवन देव— हे पवन देव यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। भोले बाबा के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से हम जा रहे हैं, मार्ग में हमें अपनी अति विशेष कृपा प्रदान कीजिए,जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

सूर्य देव— हे सूर्य देव यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। भोले बाबा के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से हम जा रहे हैं, मार्ग में हमें अपनी अति विशेष कृपा प्रदान कीजिए,जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

शंकर जी— हे भोले बाबा! यह 20 रुपये आपकी दक्षिणा और प्रसाद के निमित्त संकल्प करके आपको अर्पण कर रहे हैं इसे स्वीकार करें। हम हनुमान जी के छोटे से शिष्य आपके धाम में भगवान श्री कल्कि की कृपा से आ रहे हैं। हे प्रभु हमें अपने दर्शन दीजिए। कलियुगी, आसुरी, शैतानी शक्तियों के सभी प्रहारों को विफल करके समस्त दैवीय शक्तियों की सहायता दिलवाकर मार्ग में हमें अपनी अति विशेष कृपा प्रदान कीजिए, भोले बाबा के धाम बैजनाथ में कल्कि जी की कृपा से हम जा रहे हैं, मार्ग में हमें अपनी अति विशेष कृपा प्रदान कीजिए,जिससे हम बिना किसी विध्न बाधा परेशानी के समय से वहाँ पहुंच सकें, ऐसी कृपा कीजिए। हम स्वस्थ रहकर सुखी भाव से वैभवतापूर्वक कल्कि भगवान के प्राकटय के प्रचार का कार्य सहपरिवार करना चाहते हैं।

मजे की बात 17 तारीख को राजधानी ट्रेन ठीक समय से चली। 18 तारीख प्रात: वैद्यनाथ धाम (जे.एस.डी) 20 मिनट पहले पहुँच गई जिससे सारे कार्यक्रम विधिवत्त रूप से संपन्न हुआ। प्रार्थना उपचार बच्चों सिर्फ जाने का किया था सो राजधानी ट्रेन 17 जनवरी 2014 को ठीक समय पर चली। अगले दिन पटना कोलकाता के बीच जे.एस.डी (वैद्यनाथ धाम देवघट) बेहद कोहरे के बावजूद निश्चित समय से 20 मिनट पहले पहुँच गई। ऊपर पढ़े उपचार-प्रार्थना जाने के करे थे आने के नहीं सो ट्रेन समय से आवश्य चली गई। नई दिल्ली लौटते समय महज 5 घंटे लेट से थी सो रेलवे लंच सबको दिया। लेकिन यही ट्रेन जाते हुए होती तो जाने वालों से पूछो कितनी ठेस सबकी कलियुग खुशियों को पहुँचाता। राजसी उत्सव महज औपचारिक (मुँह दिखावा) कहलाता।

अब तो 140 कल्कि भक्तों की आत्मा से निकलेगा कि हमारे श्री कल्कि भगवान चमत्कारी हैं और कितने सटीक हैं उनके स्वप्न अनुभव और उपचार।

आम के आम गुठलियों के दाम

भगवान श्री कल्कि लखनऊ में बाबा भूतनाथ आश्रम में भी विराजे

प्रचार कार्य के उपहार स्वरूप तीर्थयात्रा और पिकनिक का आनंद दिलवाया

—सुश्री संगीता गग 09873349478

भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हम कल्कि भक्तों के लिए किसी पर्व से कम नहीं होती। यह वह अनमोल क्षण होते हैं जब समस्त दैवीय शक्तियाँ अपनी उपस्थिति का अहसास हम भक्तों को करवाती हैं। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के पॉश इलाके भूतनाथ में बाबा भूतनाथ के आश्रम में दिनांक 17 जनवरी 2014 भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री बाबा भूतनाथ मंदिर लखनऊ के प्रसिद्ध मंदिरों में से है यहाँ माँ पार्वती, भोलेनाथ, गणेश जी, त्रिपुर सुंदरी, मां संतोषी, हनुमान जी, बगुलामुखी मां, माँ कामाख्या, भैंरों बाबा तथा मां दुर्गा की मूर्तियाँ स्थापित हैं। चुटक बिंदाक का अति सुंदर मंदिर यहाँ बना हुआ है। साथ में ही एक साफ सुंदर गऊशाला भी बनाई गई है तथा माँ कामाख्या यज्ञशाला भी है।

जनवरी महीने में भगवान श्री कल्कि की चार मूर्तियाँ स्थापित होने के कारण श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्यों ने टीम बनाकर अलग अलग जगहों पर जाकर कार्य किया। लखनऊ में 10 सदस्यों ने मूर्ति स्थापना महोत्सव में भाग लिया। भगवान श्री कल्कि की शोभायात्रा में पूजा में भाग ले रहे पुजारी जी ने शंखनाद करके पूरे रास्ते में भगवान श्री कल्कि का प्रचार किया। भगवान श्री कल्कि के हवन महामंत्र तथा 108 विशेष नामों का हवन भी संपन्न हुआ। दिल्ली वाले भी मजा लेने में किसी से कम नहीं। भंडारे व आरती के पश्चात दिल्ली से गए सभी भक्तों ने नैमिषारण्य जाकर सभी तीर्थों के कल्कि परिवार के रूप में सामूहिक दर्शन किए। प्रस्तुत है इस यात्रा की कुछ झलकियां—

नैमिषारण्य विश्व का प्रथम तीर्थ तपोमय सनातन तीर्थ है। लखनऊ से मात्र डेढ़ घंटे की दूरी पर स्थित नैमिषारण्य में आज भी 80 कोस तक सत्युग का वास है। इस पवित्र पावन स्थल की भूमि को नमन करते हुए हमने सबसे पहले आदि शक्ति भगवती माँ ललिता के दर्शन किए। यहाँ माँ का कटि भाग गिरा था इसलिए इसे लिंगधारणी भी कहते हैं। यह मंदिर माँ के 52 शक्तिपीठों में से एक है। यह मंदिर भारत सरकार के आधीन है। यहीं भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना 19 जनवरी 2010 में डिस्ट्रिक्ट जज के आदेश से हुई थी।

कहाँ तप करें जहाँ सुदर्शन चक्र जाए—

चक्रतीर्थ :- चक्र तीर्थ के किनारे बैठ कर ऋषियों ने 18 पुराणों की कथा एवं द्वादश वार्षिक सत्र का आयोजन किया था। वहाँ उपस्थित ब्राह्मणों नें हमें बताया कि चक्र तीर्थ में जल का आगमन आज भी सुचारू रूप में पाताल लोक से हो रहा है। इस तीर्थ में मार्जन करने मात्र से शरीर के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ 88 हजार शौनकादि ऋषियों ने भगवान भूतेश्वर नाथ के नाम से भगवान शिव की प्रतिष्ठा की। इनकी विशेषता यह है कि यह प्रतिमा आज भी तीन रूपों में परिवर्तित होती है। चक्रतीर्थ से संलग्न गऊ घाट तीर्थ पर पितरों की तृप्ति के लिए पूजन होता है इसे नाभि गया भी कहते हैं।

व्यास गद्दी :- यहाँ महर्षि व्यास ने 18 पुराणों की रचना की थी। यहीं स्थित स्वयंभू मनु शतरूपा ने 23 हजार वर्षों तक भगवान विष्णु को पुत्र रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या की थी, जिसके फलस्वरूप मनु शतरूपा के यहाँ त्रेता युग में प्रभु राम के रूप में उनके पुत्र बनकर अवतरित हुए।

दधिची कुंड :- यहाँ ऋषि दधीचि ने इन्द्र के आग्रह पर दैत्यों एवं असुरों के संग्राम के लिए अपनी अस्थियों का दान दिया था। उनके आग्रह पर ही देवराज इन्द्र ने सभी तीर्थों का जल मिश्रित करके इस तीर्थ की स्थापना की थी। इस कुंड की 3 कि.मी. लंबी परिक्रमा भी है।

हनुमान गढ़ी :- अहिरावण का वध करने के पश्चात् हनुमान जी ने यहाँ विश्राम किया था। इसी स्थल पर हनुमान जी की दक्षिणमुखी विराट मूर्ति है। भगवान राम ने भी नैमिषारण्य तीर्थ में दशाश्वमेध यज्ञ किया था। पाँचों पांडवों ने भी 12 वर्षों तक इस तपोभूमि में तप किया था।

तपोभूमि नैमिषारण्य में सत्यनारायण व्रत कथा एवं श्रीमद्भागवत कहने और सुनने का विशेष फल है। सो हमने भी यहाँ सत्यनारायण व्रत कथा का श्रवण किया।

17 जनवरी की रात को लखनऊ मेल से हमारी वापसी थी। बच्चों कड़ाके की ठंड और धुंध के कारण भारतीय रेलें अपने समय से

4 या 5 घंटे तक देरी से चल रही थीं लेकिन भगवान श्री कल्कि की कृपा से हमारी ट्रेन उपचार करने के कारण * जो उपचार सबको एस. एम. एस करा था आते समय केवल 50 मिनट लेट हुई थी। इसी कारण हम नैमिषारण्य की यात्रा कर पाए और मूर्ति स्थापना महोत्सव समय से संपन्न हो गया। भगवान श्री कल्कि ने अपने प्रचार कार्य के फलस्वरूप हमें तीर्थयात्रा और पिकनिक दोनों का उपहार पुरस्कार के रूप में दे दिया। जो आनंद और ज्ञान हमें वहाँ मिला उसे शब्दों में बांधने का प्रयास तो किया है। अपने कौन से पुण्यों के फलस्वरूप हम नैमिषारण्य और लखनऊ गए और जाने कितने पुण्य अपनी झोली में संचित कर लाए। यह तो हम जाने या कल्कि जी जानते हैं।

भगवान श्री कल्कि गोलू महाराज मंदिर भुवाली नैनीताल में विराजे

मकर संक्रांति की शुभ पावन बेला में 14 जनवरी 2014 को भगवान श्री कल्कि की मूर्ति की स्थापना भुवाली नैनीताल में स्थित गोलू देव जी के प्रसिद्ध मंदिर में संपन्न हुई। दिल्ली से गए एवं वहाँ के सभी भक्तों ने पूरे जोर शोर व उल्लास के साथ शोभा यात्रा का आनंद लिया व सत्संग-संकीर्तन का आनंद उठाया। कल्कि नाम के जयकारों से वहाँ का सारा वातावरण कल्किमय हो गया। भगवान श्री कल्कि की अनंत कृपा है कि वह हमें अपने प्रचार के कार्यों संलग्न कर हमें अपने जीवन को सफल करने का लक्ष्य दे रहे हैं।

आश्चर्यजनक किंतु सत्य

श्री कल्कि बाल वाटिका फाऊंडेशन की अध्यक्षता में श्री ललित कंवर और श्री आशा कंवर ने भगवान श्री कल्कि की मूर्ति श्री हनुमान जी और दुर्गा जी सहित प्रतिष्ठित करवाई।

प्यारे बच्चों आज मैं तुम्हें 1960 में ले जा रहा हूँ जब श्री आर.डी. गोयल, श्री मनोकांत तिवारी जगद् गुरु शंकराचार्य के यहाँ "**महाक्रांतिकारी की खोज**" भजन पुस्तिका के लिये जगद् गुरु शंकराचार्य एवं प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के यहाँ गए थे। प्रभुदत्त जी ने तो बहुत सुगमता से प्रशस्ति पत्र दे दिया परन्तु जगद् गुरु के सैक्ट्री ने काफी शास्त्रार्थ के बाद 1992 में प्रशस्ति पत्र दिया जो कि संस्कृत,हिन्दी और अंग्रेजी के कल्कि पुराण में छपा हुआ है। हालांकि प्रति वर्ष वह भगवान श्री कल्कि की जयंती कूचापाती राम में आते थे और सनातन समाज को कल्कि जी के विषय में बताते थे।

आज बहुत आश्चर्य की बात है कि शामली में ....जहाँ गाँव वालों ने उनके ठहरने का विशेष प्रबंध किया हुआ है वहीं जगद् गुरु शंकराचार्य ने 9 विद्वान प्रकांड आचार्य एवं शास्त्री दिये जिनकी अध्यक्षता में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति पूजा 5 दिन चली और प्राण प्रतिष्ठा हुई। जगद् गुरु एक दिन पहले वहाँ आए और अगले दिन भगवान श्री कल्कि की प्रतिमा के हृदय पर अपने अंगुष्ठ से शक्ति प्रदान की। वहाँ हुए विशाल हवन में भी उन्होंने आशीर्वाद दिया। इसके बाद मात्र 5000 हिन्दुओं के गाँव में जिसमें से लगभग 900 व्यक्ति वहाँ उपलब्ध थे के बीच प्रवचन कर वह अपने अगले कार्यक्रम के लिये प्रस्थान कर गए।

23 फरवरी 2014 को आओ चलें संभल सुप्त तीर्थ जागरण अभियान में

23 फरवरी 2014 को श्री वंशगोपाल तीर्थ एवं 23 मार्च 2014 को चंदेशवर महादेव पर श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ के आयोजन में आप सभी सादर आमंत्रित हैं

भगवान श्री कल्कि
की मनमोहक छवि

शोभा यात्रा में
फूलों की बग्घी में
प्रभु कल्कि

नैमिषारण्य तीर्थ स्थलों की झलकियाँ

व्यास गद्दी

माँ ललिताम्बा मंदिर

दधीचि कुंड

चक्र तीर्थ

हनुमान गढ़ी

Registered with the Registrar of Newspaper for India Under No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL(DG)-11/8061/2012-2014

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी आए प्रतिदिन बदलाव।

आश्चर्यजनक किंतु सत्य.....महाविष्णु का भगवान श्री कल्कि ऐसा चमत्कारी अवतार जिसके प्रकट होने से पहले सिद्ध पीठों और शक्तिपीठों में मूर्तियाँ लग रही हैं और विधिवत पूजा हो रही है

श्री कल्कि बाल वाटिका के सदस्य अग्रोहा धाम में बनने वाले श्री कल्कि संग्रहालय में कार्यरत

आप धर्म की रक्षा करें धर्म आपकी रक्षा करेगा – आप भी ऐसा धार्मिक कार्य चाहते हैं और आपके पास 2000 मीटर के करीब या कम स्थान हो तो श्री कल्कि संग्रहालय के लिए हम आपके सहयोग के लिए प्रस्तुत हैं

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

भारत भूमि पर हमारा जन्म सौभाग्य की गाथा गाता है। भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है।* भगवान विष्णु के दशावतार * अभी कल्कि क्यों? * कलियुग के चौथे चरण के लक्षण * कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया? * हनुमान जी/ रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों? * प्राचीन भारत-आधुनिक भारत में अंतर * कल्कि जी की पुकार क्यों करें? * कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला * श्री कल्कि की पुकार ही सार है * कल्कि जी की भक्ति कैसे करें? * कल्कि जी का प्रचार कैसे करें? * धर्म/ भक्ति / ज्ञान और कल्कि * श्री कल्कि साहित्य*

ऑडियो सी.डी.

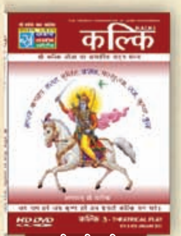

डी.वी.डी.

यू.एस.बी. | पैन ड्राइव

मंत्र बाक्स

श्री कल्कि जी का शुभ का खजाना

अपनी आमदनी में से कम से कम एक प्रतिशत अधिक से अधिक दस प्रतिशत रुपया भगवान श्री कल्कि के शुभ के खजाने में डालें।

इस खजाने को कहाँ लगाएं?— श्री कल्कि बाल वाटिका की संस्कार रोपण कार्यशालाओं, श्री कल्कि जी के हवनों, सत्संग, कल्कि जी के उपचारों में, कल्कि जी के महोत्सवों-कीर्तन, अनुभव गोष्ठी, मूर्ति स्थापना, शोभा यात्रा, कल्कि जी के उत्सवों में आने जाने मे, कल्कि जी के आगामी बनने वाले संग्रहालयों में एवं कल्कि जी के अन्य प्रचार के कार्यों में लगाएं। साहित्य में कम से कम 25 से 30 प्रतिशत अवश्य लगाएं, इससे आपके घर एवं व्यापार के प्रगति के मार्ग योजनाबद्ध तरीके से खुलते चले जाएंगे।

श्री कल्कि बाल वाटिका

चाँदनी चौक ❖ कसेरू वालान, पहाड़गंज ❖ पालनपुर ❖ देहरादून ❖ असरोही ❖ कोलकाता ❖ चेन्नई

1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661

हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079

सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035

कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440

2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)

आभार/Ack.: श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स

योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु

प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36, सै.-8, नोएडा, गौतम बुद्धनगर (यू.पी.)

पारस प्रिंटिंग प्रेस, पटपड़गंज, नई दिल्ली

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका

के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—

☎ 9312533445, 9136377829, 9968314876

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 120/- रुपए मात्र

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें

जब तक काम पूरा न हो

मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक,

लाईट प्रभारी : हर्षित गुप्ता, अंकित गड़ौदिया,

अक्षय गड़ौदिया-9999885277